फिर कभी आना मेरे दोस्त - सुकन्या दत्ता

फिर कभी आना मेरे दोस्त,
चलेंगे कहीं दूर तुम्हारे साथ
बैठ कर करेंगे बातें, सारी रात

देखेंगे चांद को ढलते हुए सूरज की चाहत में
सुनेंगे पंछियों को गाते हुए सुबह की आहट में
गाएंगे हम भी कोई गीत, रखकर तुम्हारे हाथों में हाथ

फिर कभी आना मेरे दोस्त,
चलेंगे कहीं दूर तुम्हारे साथ
बैठ कर करेंगे बातें, सारी रात

आज ज़िन्दगी ने हमें बांधे रक्खा है ज़ंजीरों में
ईश्वर भी शायद बंधे पड़े हैं मंदिरों में
कभी तो मिलेगी मुक्ति, सुधरेंगे हम दोनों के हालात

फिर कभी आना मेरे दोस्त,
चलेंगे कहीं दूर तुम्हारे साथ
बैठ कर करेंगे बातें, सारी रात

कई बार सोचा है कि बस अब और नहीं, बहुत हुआ
क्या ग़लत किया जो हमनें दिल को छुआ
बेबाक धड़कता रहता है वह, उस से भी कर लेते हैं बात

फिर कभी आना मेरे दोस्त,
चलेंगे कहीं दूर तुम्हारे साथ
बैठ कर करेंगे बातें, सारी रात